नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

आशा भोंसले ; संगीत के इंद्रधनुष का एक युग समाप्त

भारतीय संगीत जगत ने आज एक ऐसी आवाज खो दी है, जिसने न केवल सुरों को जिया, बल्कि उन्हें नए अर्थ भी दिए. आशा भोंसले का निधन केवल एक महान गायिका का जाना नहीं है, बल्कि भारतीय सिनेमा और जनमानस के उस जीवंत अध्याय का अंत है, जिसने सात दशकों तक भावनाओं, प्रयोगों और अभिव्यक्ति के नए आयाम रचे. वे परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सेतु थीं,एक ऐसी कलाकार, जिसने हर दौर के संगीत को अपनी पहचान दी.

आशा भोंसले का जीवन संघर्ष, साहस और आत्मनिर्भरता की मिसाल रहा. सांगली में जन्मी आशा जी ने कम उम्र में ही जीवन की कठोर सच्चाइयों का सामना किया. पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर के निधन के बाद परिवार की जिम्मेदारी उनके कंधों पर आ गई. उस दौर में जब संगीत की दुनिया में स्थापित होना आसान नहीं था, उन्होंने न केवल अपनी जगह बनाई, बल्कि अपनी विशिष्ट पहचान भी गढ़ी. शुरुआती दिनों में उन्हें वे गीत मिले जिन्हें अन्य गायक ठुकरा देते थे, लेकिन यही चुनौती उनके लिए अवसर बनी.

भारतीय फिल्म संगीत में आशा भोंसले का सबसे बड़ा योगदान उनकी अद्भुत बहुमुखी प्रतिभा रही. उन्होंने यह साबित किया कि एक गायिका किसी एक शैली तक सीमित नहीं होती. ओ.पी. नैय्यर और आर.डी. बर्मन के साथ उनके प्रयोगों ने हिंदी फिल्म संगीत को नई दिशा दी. 'पिया तू अब तो आजा' और 'दम मारो दम' जैसे गीतों ने उन्हें आधुनिक, साहसी और प्रयोगशील आवाज के रूप में स्थापित किया. वहीं 'उमराव जान' की गजलें यह दर्शाती हैं कि वे शास्त्रीय संगीत की गहराइयों में भी उतनी ही पारंगत थीं. इस तरह आशा जी ने संगीत को वर्गों में बांटने की परंपरा को तोड़ा और उसे एक व्यापक सांस्कृतिक अनुभव में बदल दिया.

उनकी आवाज केवल सुरों का संगम नहीं थी, बल्कि भावनाओं की जीवंत अभिव्यक्ति थी. चुलबुले गीतों में उनकी चपलता, गजलों में उनकी नजाकत और भक्ति गीतों में उनकी श्रद्धा—हर रंग में वे पूरी तरह ढल जाती थीं. यही कारण है कि वे हर पीढ़ी की पसंद बनी रहीं. मंच पर उनकी ऊर्जा और जीवंतता यह साबित करती थी कि कला उम्र की मोहताज नहीं होती.

आशा भोंसले का व्यक्तित्व भी उतना ही बहुआयामी था जितनी उनकी कला. संगीत के साथ-साथ उन्होंने अपने पाक-कौशल को भी पहचान दी और 'आशा'ज' रेस्टोरेंट श्रृंखला के माध्यम से एक नई पहचान बनाई. यह उनकी सृजनात्मकता का ही विस्तार था कि वे हर क्षेत्र में कुछ नया करने का साहस रखती थीं.

पुरस्कारों और सम्मानों की लंबी सूची उनके योगदान का केवल औपचारिक प्रमाण है. गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड से लेकर दादा साहब फाल्के पुरस्कार और पद्म विभूषण तक,ये सभी सम्मान उनके उस असाधारण सफर की गवाही देते हैं, जिसे उन्होंने अपने दम पर तय किया.

आज जब आशा भोंसले हमारे बीच नहीं हैं, तब यह प्रश्न भी हमारे सामने है कि क्या आज का संगीत उतना ही साहसी और प्रयोगशील है जितना उनके दौर में था. उनका जाना केवल एक शून्य नहीं, बल्कि एक चुनौती भी है,नई पीढ़ी के कलाकारों के लिए कि वे सीमाओं को तोड़ने का साहस करें.

आशा ताई का स्वर भले ही अब खामोश हो गया हो, लेकिन उनकी गूंज भारतीय संगीत की आत्मा में हमेशा जीवित रहेगी. यही उनकी सबसे बड़ी विरासत है,एक ऐसा संगीत, जो समय से परे है. आशा भोंसले के निधन के बाद दरअसल,संगीत के इंद्रधनुष का एक युग समाप्त हो गया है. उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि.

डायलॉगबाजी और धमकियों का महायुद्ध

श्याम यादव

जला कर राख कर दूंगा, मेरी बात मानो नहीं तो आग लगा दूंगा. सुनने में यह किसी सी ग्रेड फिल्म का डायलॉग लगता है, जहां कहानी से ज्यादा आवाज़ ऊँची होती है. फर्क बस इतना है कि यहां पर्दा नहीं है, और जो बोल रहे हैं वे किरदार नहीं, असली दुनिया के बड़े चौधरी हैं। पहले एक बयान आता है-हमने अगर ठान लिया तो नक्शे से मिटा देंगे। जवाब में दूसरी तरफ से आवाज़ उठती है-हम भी चुप बैठने वालों में नहीं हैं। फिर तीसरी तरफ से जोड़ दिया जाता है-अंजाम अच्छा नहीं होगा। बात यहीं खत्म नहीं होती, अगला बयान पहले से थोड़ा और भारी आता है। जैसे शब्दों का वजन ही ताकत का पैमाना हो गया हो। यह पूरा मामला अब युद्ध से ज्यादा बयानबाज़ी का हो गया है। असली तैयारी कितनी है, यह बाद की बात है, लेकिन शब्द पूरी तैयारी में हैं। हर बयान के बाद लगता है कि अब कुछ होगा, मगर होता सिर्फ अगला बयान है। एक तरह से यह सिलसिला खुद ही अपना कारण बन गया है-बयान इसलिए दिया जा रहा है क्योंकि सामने वाला बयान दे रहा है। धमकी देने का भी एक तय तरीका बन गया है। पहले

चेतावनी दीजिए, फिर इतिहास याद दिलाइए, फिर अपनी ताकत गिनाइए और आखिर में कह दीजिए-यह आखिरी चेतावनी है। मज़े की बात यह है कि यह आखिरी चेतावनी बार-बार आती है और हर बार उतनी ही नई बताई जाती है। जैसे 'आखिरी' शब्द का अर्थ अब सिर्फ औपचारिकता भर रह गया हो। बीच-बीच में संयम भी शामिल रहता है। हर पक्ष बताता है कि वह संयम बरत रहा है। ऐसा संयम, जिसमें बात पूरी कही जाती है और गुस्सा भी पूरा दिखाया जाता है। संयम और चेतावनी साथ-साथ चल रहे हैं, जैसे एक ही सिक्के के दो पहलू हों-एक से डर दिखाया जाता है, दूसरे से जिम्मेदारी। यहां दिलचस्प यह भी है कि हर बयान अपने आप में अंतिम सत्य की तरह पेश किया जाता है। कोई भी पक्ष यह नहीं मानता कि वह सिर्फ प्रतिक्रिया दे रहा है। हर कोई खुद को पहल करने वाला बताता है, और सामने वाले को उकसाने वाला। इस चक्कर में असली बात कहीं पीछे छूट जाती है और शब्द आगे निकल आते हैं। आम आदमी यह सब ऐसे सुन रहा है जैसे कोई पुराना सीन बार-बार दोहराया जा रहा हो। उसे मालूम है कि असली फैसले कहीं बंद कमरों में होंगे, लेकिन यहां जो चल रहा है वह सिर्फ आवाह्नों का लेन-देन है। टीवी स्क्रीन पर चेहरे बदलते रहते हैं, शब्द लगभग वही रहते हैं। कभी-कभी यह पूरा घटनाक्रम किसी रिहर्सल जैसा लगता है। जैसे असली मंचन अभी बाकी है और फिलहाल संवादों की प्रैक्टिस चल रही है। हर कोई अपनी लाइन याद कर रहा है, अपनी आवाज़ ऊँची कर रहा है और यह देख रहा है कि उसका असर कितना पड़ रहा है। इस सबके बीच सबसे बड़ा सवाल यह नहीं है कि कौन क्या कह रहा है, बल्कि यह है कि कब तक सिर्फ कहा जाता रहेगा। क्योंकि शब्दों की भी एक सीमा होती है। एक समय के बाद वे या तो थक जाते हैं या फिर अपने ही असर को खो देते हैं। लेकिन अभी स्थिति यह है कि शब्द थकने को तैयार नहीं हैं।

हर दिन एक नया बयान, हर दिन एक नई चेतावनी। और हर नई चेतावनी के साथ पुरानी चेतावनियों की गूंज भी बनी रहती है। यह एक ऐसा शोर बन चुका है जिसमें असली खतरे की आवाज़ पहचानना मुश्किल होता जा रहा है। कभी-कभी लगता है कि यह सब इसलिए भी हो रहा है क्योंकि शब्द सुरक्षित हैं। उन्हें बोलने में जोखिम कम है, दिखाने में असर ज्यादा है। असली कदम उठाने में जो जिम्मेदारी और परिणाम जुड़ा होता है, उससे बचने का आसान तरीका है-बोलते रहिए। आखिर में बात फिर वहीं आकर ठहर जाती है। बयान जारी हैं, चेतावनियां जारी हैं, और दुनिया अपने काम में लगी हुई है। युद्ध कहीं दूर खड़ा है, और उसके पहले डायलॉगबाज़ी का लंबा सिलसिला चल रहा है। कभी-कभी लगता है कि अगर ये सारे बयान एक साथ जोड़ दिए जाएं तो एक पूरी फिल्म बन सकती हैं। नाम भी तैयार है-धमकी- द फाइनल वार। फर्क बस इतना होगा कि इसमें कहानी कम और संवाद ज्यादा होंगे, और दर्शक अंत तक यही सोचते रहेंगे कि असली एक्शन कब शुरू होगाज् या फिर सिर्फ ट्रेलर ही चलता रहेगा

विंध्य की डायरी

प्रभारी मंत्री ने दी आचरण को अनुशासित रखने की सीख

डॉ. रवि तिवारी

सतना के प्रभारी मंत्री और प्रदेश केबिनेट के वरिष्ठ सदस्य कैलाश विजयवर्गीय ने भारतीय जनता पार्टी की स्थापना दिवस से प्रारंभ हुए गाँव चलो, बस्ती चलो अभियान का शुभारंभ करते हुए कार्यकर्ताओं को खुलकर नसीहत दी. उन्होंने माना कि पार्टी का कार्यकर्ता कई बार विपक्ष के फैलाए गए नैरेटिव का शिकार हो जाता है. ऐसी स्थिति में हमेशा यह ध्यान रखना है कि हम सब देश के लिए काम करते हैं. पार्टी इसके बाद आती है. देश का नेतृत्व मजबूत हाथों में है. इसे हम सब को मिलकर और मजबूत करना है.

उन्होंने सत्ता के साथ पैदा होने वाले विकारों से दूर रहने की सलाह देते हुए कहा कि पार्टी की सेवा करने वाले को कभी किसी पद का गुमान नही होना चाहिए. पद आनी-जानी चीज है. पार्टी के हितों को संरक्षित करने का दायित्व सबके ऊपर है. पार्टी हल्के में प्रभारी मंत्री की दी गई यह नसीहत फिलहाल लोगों के बीच चर्चा का विषय बनी हुई है. लीक से हटकर व्यवहार करने वाले पहचान रखने वाले श्री विजयवर्गीय का कार्यकर्ताओं के बीच खुलकर संवाद नए पदाधिकारियों के लिए बड़ा संकेत माना जा रहा है.

परफॉर्मेंस सुधारने तीन माह का अल्टीमेटम

कांग्रेस पार्टी संगठन और पदाधिकारियों की सक्रियता को लेकर बेहद गंभीर है. पद पाने के बाद पार्टी के मंशानुसार सक्रिय होकर काम न करने वालों को बाहर का रास्ता दिखाने का काम शुरू कर दिया गया है. चार माह पूर्व निर्वाचित हुए यूथ कांग्रेस रीवा के अध्यक्ष अनूप सिंह चंदेल सहित प्रदेश महामंत्री द्वय प्रमोद पटेल व विनय पाण्डेय के पद को राष्ट्रीय महासचिव व प्रदेश प्रभारी ने होल्ड कर दिया है. साथ ही तीन माह का अल्टीमेटम दिया गया है कि संगठनात्मक गतिविधियों की मजबूती के लिये कार्य नहीं किया गया तो संगठन के मूलभावना अनुसार पदीय दायित्वों से मुक्त कर दिया जायेगा. इस आदेश के बाद यूथ कांग्रेस के पदाधिकारियों के कान खड़े हो गये हैं. पार्टी यदि ऐसे ही आदेश समय-समय पर जारी करती रही तो निश्चित रूप से आने वाले समय में युवक कांग्रेस सहित कांग्रेस के पदाधिकारी सक्रिय भूमिका पर नजर आएंगे. ऐसा लग रहा है कि आगामी आने वाले चुनावों को लेकर कांग्रेस अभी से संगठनात्मक ढ़ांचे को मैदानी स्तर पर मजबूती के साथ खड़ा करने के लिये रोडमैप तैयार कर रही है.

किसानों पर ओलावृष्टि की मार

विंध्य के किसानो पर बेमौसम बारिश के साथ ओलावृष्टि की मार पड़ी है. प्रदेश भर में जहा अलग-अलग ओलावृष्टि हुई, वही विंध्य क्षेत्र भी अछूता नही रहा. जब फसलों को पानी चाहिए था तब बारिश नहीं हुई और जब फसल पक कर तैयार हुई तो ओलावृष्टि की मार पड़ी. मैहर से लेकर ऊर्जाधानी तक कई जगह बारिश के साथ हुई ओलावृष्टि से किसानों की फसलों को भारी नुकसान हुआ है. दलहन, तिलहन समेत गेहूं और जौ की फसलें खराब हुई हैं. लेकिन अभी तक सर्वे का काम शुरू नहीं किया गया है. कई जगह तेज ओलावृष्टि से किसानों की फसल पूरी तरह नष्ट हो गई है.

सीएम से विधायक की बंद कमरे में चर्चा

भाजपा के 47 वें स्थापना दिवस पर त्योंथर से भाजपा विधायक सिद्धार्थ तिवारी ने मुख्यमंत्री निवास पर सीएम डा. मोहन यादव से सौजन्य भेंट की. बंद कमरे में हुई मुलाकात और चर्चा से राजनीतिक गलियारे में हलचल तेज हो गई है. हालाकि यह कोई पहली मुलाकात नहीं है इस तरह पहले भी मुलाकात होती रही है. मुलाकात में आगामी निगम-मंडल की नियुक्तियों को लेकर गंभीर चर्चा हुई. माना जा रहा है कि विधायक श्री तिवारी ने विंध्य क्षेत्र के सक्रिय कार्यकर्ताओं को इन महत्वपूर्ण पदों पर जिम्मेदारी देने और क्षेत्र के विकास में निगमों की भागीदारी बढ़ाने पर अपना पक्ष रखा. सीएम और विधायक के बीच हुई मुलाकात को लेकर कई तरह के कयास लगाये जा रहे हैं और राजनीतिक गलियारे में तरह-तरह की चर्चाएं हैं. उधर विधायक ने इसे एक सामान्य शिष्टाचार भेंट बताया है और कहा कि क्षेत्र में हुई ओलावृष्टि से हुए नुकसान को लेकर चर्चा की गई है. लेकिन जिस तरह से बंद कमरे में 20 मिनट तक गुफ्तगू हुई उससे यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक नियुक्तियों में विंध्य को बहुत कुछ मिल सकता है.

जनविश्वास संशोधन कानून में नरमी

गत सप्ताह जनविश्वास (संशोधन) विधेयक पारित कर दिया गया जिसमें मामूली नियमोल्लंघन को अपराध नहीं मानने का प्रावधान है. इससे व्यवसाय करने की सुविधा या ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को मदद मिलेगी. अब छोटी मोटी चूक के लिए जेल की सजा न देते हुए जुर्माना किया जाएगा. इससे न्यायव्यवस्था का बोझ भी कम होगा. उत्पादन गतिविधियों के लिए क्षमता बढ़ाने में भी तेजी आएगी. आर्थिक उदारीकरण की दिशा में आगे बढ़ने के लिए ऐसे सुधार जरूरी हैं. भारत में ब्रिटिश शासनकाल तथा उसके बाद समाजवादी अर्थव्यवस्था के दौरान अनेक सख्त कानून बने थे जो नई आर्थिक नीति से सुसंगत नहीं हैं. प्रधानमंत्री मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि देश में उन पेचीदा कानूनों को बदला जाना चाहिए जो 2 सदी पुराने हैं और आधुनिक अर्थव्यवस्था से मेल नहीं खाते. आज सरल, सक्षम तथा आसानी से लागू किए जानेवाले कानूनों की आवश्यकता है जो नई अर्थव्यवस्था का नियमन कर सकें. पुराने कानून व्यवसाय में रुकावट डालने वाले थे तथा उद्योग-व्यवसाय करनेवालों पर गैरजरूरी बंधन लाद कर उन्हें आतंकित करते थे. कोटा-परमिट राज की वजह से अनावश्यक दिक्कतें आ गई थीं और व्यवसाय की प्रगति रुक गई थी. फिर एकल खिड़की योजना का प्रावधान किया गया लेकिन पुराने नियमों-कानूनों की बाधा बनी रही. एनडीए सरकार कम शासकीय हस्तक्षेप के साथ अधिक सुशासन देने की दिशा में सक्रिय रही. यदि वातावरण व्यवसाय के लिए अनुकूल हो तो बाजार की ताकतें बेहतर काम करती हैं. देश में 90 के दशक में नरसिंहराव सरकार के दौरान नई आर्थिक नीति लागू हुई जिसमें तत्कालीन वित्तमंत्री मनमोहन सिंह की बड़ी भूमिका थी. इससे अर्थव्यवस्था बंधनमुक्त व सुदृढ़ होने लगी. मामूली नियमोल्लंघन मामलों में क्षमादान योजना लागू की गई लेकिन जहां अपराध गंभीर था, वहां सख्ती दिखाई गई. अब अर्थव्यवस्था को उच्च विकास गति कायम रखने के उद्देश्य से उन कानूनों को नरम किया गया जो व्यापारियों को शक की नजर से देखते थे. अनावश्यक तथा जटिल कागजी कामकाज में भी राहत दी गई.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

मतदाता ने कौन सा कमाल किया उसने किस प्रकार का वोट दिया

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हमें बताइए कि आजकल दान-पुण्य करने की प्रवृत्ति कम क्यों हो गई है जबकि हमारे देश में राजा बलि और कर्ण जैसे महान दानवीर हुए हैं.'

हमने कहा, 'लोकतंत्र में सबसे बड़ा दान है मतदान जिसे वोटर ने दिल खोलकर दिया है. पुडुचेरी के पुण्यवान मतदाताओं ने सर्वाधिक 89.83 प्रतिशत मतदान किया. उसके बाद असम के वोटरों ने 85.38 फीसदी वोटिंग की. केरलम में भी मतदाताओं ने दमखम दिखाया और 78.03 प्रतिशत वोट डाले. वो तो अच्छा है कि ईवीएम का जमाना है वरना इतने ज्यादा मतदान से पुरानी मतपेटी का पेट ही फूट जाता.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, निशाना लगाने वाले को उड़ते पंछी के पर पहचानने चाहिए. आप सिर्फ इतना बताइए कि मतदाताओं ने किस पार्टी या गठबंधन को जिताने के लिए बड़ी तादाद में वोट दिया. उनके वोट का चरित्र क्या था?'

हमने कहा, 'आपको सांसदों-विधायकों का चरित्र

देखना चाहिए. वोट का चरित्र देखकर क्या करेंगे? इसके अलावा यह भी जान लीजिए कि एग्जिट पोल पर रोक लगी है, इसलिए ज्यादा पूछताछ मत कीजिए. जनता को मताधिकार देनेवाले नेता सत्ता पर सर्वाधिकार चाहते हैं. लोगों को कर्तव्य पथ पर चलने की सीख देनेवाले चुनाव जीतकर कर्तव्यशून्य भी हो सकते हैं. ऊंची दुकान में फीके पकवान हों तो आप क्या कर लेंगे?'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, कुछ तो हिन्ट दीजिए. यह बताइए कि जनता ने पाजिटिव वोट दिया या निगेटिव ? वोट सिक्यूलर था या कम्युनल? स्थिरता का वोट दिया या बदलाव का? सहमति का वोट दिया या असहमति का? वोट खुशी का था या नाराजगी का ? वोट सार्थक था या निरर्थक? जनादेश स्पष्ट रहेगा या अस्पष्ट? किसी पार्टी को क्लीयर मेजारिटी मिलेगी या फिर हंग असेम्बली अर्थात लंगड़ी विधानसभा बनेगी?'

हमने कहा, 'आपके सारे सवालों का जवाब मतदान के नतीजे आने पर मिल जाएगा. इसलिए अभी से बेकरार या बेचैन होने की जरूरत नहीं. मतदाताओं ने किस पार्टी या गठबंधन के प्रति प्यार जताया है, यह जानने के लिए इंतजार कीजिए. आपने गाना सुना होगा सीखा नहीं सबक तूने प्यार का, तू जाने क्या मजा इंतजार का !'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12226

-डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3		■	4	5
6		■		■	7		
8		■	9	10			
■	■	11	■	12		■	■
13	14		15	■	16		17
18		■	19			■	
	■	20		■	21	22	
23			■	24			■

ऊपर से नीचे

1. अकर्मण्य, काहिल 2. साफा 3. सदाचारी, साधुचरित (उर्दू) 4. माला का दाना, गर्दन के पीछे वाली हड्डी 5. नदी के पास का स्थान या देश (सं.) 7. अशोक चक्र के नीचे अंकित शब्द जो सत्य की विजय होने का भाव प्रकट करते हैं 10. मेहंदी (उर्दू) 11. शंखादि के समान कठोर आवरण वाला एक जल जंतु 13. चंद्रमा 14. परिमाण, नाप-तौल, अभिमान 15. अंधकार, अंधेरा 17. झुकने की क्रिया या भाव 20. रात (उर्दू) 22. खूंटा

बाएं से दाएं

1. असीम, अपार (सं.) 4. चित्त, इच्छा, जी (सं.) 6. संबंध, लगाव, प्रेम, लगन 7. प्रमाण पत्र, सबूत (उर्दू) 8. एक-सी वस्तुओं की माला 9. वह जो साहित्य की सेवा या रचना करता हो 12. नाम पर दर्ज करना, नाम से 13. विष्णु 16. वस्त्र, कपड़ा, आवरण 18. लोग, प्रजा 19. मन की अवस्था, तासीर (उर्दू) 20. तीर, वाण 21. विश्वास, भरोसा (उर्दू) 23. पूर्ण विकसित या सुंदर जान पड़ने की अवस्था, यौवनकाल (उर्दू) 24. सौत से उत्पन्न, जिसका संबंध सौत के रिश्ते से हो

Solution 12225

वि	दु	षी	■	आ	य	क	र
हा	ल	■	■	य	था	व	त
र	ह	ज	नी	■	■	च	ना
■	न	ह	र	■	अ	■	रा
उ	■	र	■	ब	धि	र	■
मे	वा	■	■	ल	क	द	क
ठ	न	क	ना	■	त	■	मी
ना	र	■	क	स	म	खा	ना

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में वाहन का सुख मिलेगा. शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता के योग है. कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी. वर्ष के मध्य में दिनचर्या में व्यवधान आयेगा. पारिवारिक समस्या में व्यस्तता रहेगी. अधिकारी के कोप का सामना करना होगा. मन व्यथित रहेगा. वर्ष के अन्त में धार्मिक कार्यो में सफलता मिलेगी. संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी, मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों की दिनचर्या में व्यवधान आयेगा. मन व्यथित रहेगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को वाहन सुख मिलेगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को धार्मिक कार्यो में सफलता मिलेगी. संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी. सिंह राशि के व्यक्तियों का मन परेशान रह सकता है. अधिकारी से मतभेद बढेंगे. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को व्यवसायिक मामलों में स्थिति सामान्य रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को शिक्षा आदि में लाभ होगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक विशेष चंचल तथा मिलनसार होगा, नेतृत्व करने की क्षमता रहेगी, किसी तरह की शिक्षा प्राप्त होगी, नौकरी तथा व्यवसाय दोनों में अग्रणी होगा, माता पिता के प्रति स्नेह रहेगा, आय के एक से अधिक साधन होंगे.

मेष- सहयोगी जोश देखकर कार्य में सहयोग करेंगे, कार्यस्थल पर आपकी उपस्थिति प्रभावी रहेगी, गुप्त शत्रुओं पर विजय मिलेगी, परिश्रम अधिक होगा.

वृषभ- जरूरतमंदों की मदद करके आप खुश होंगे, व्यवसाय की समस्या दर होगी, गुमी वस्तु मिलने का योग है, विवादों को टालना हितकर रहेगा.

मिथुन- परिवार के साथ मौजमस्ती में समय बीतेगा, सहयोगी नाराज हो सकते हैं, दूर की यात्रा का योग है. नई योजना की शुरूआत होगी.

कर्क- कार्य निपटाने का दबाव रहेगा, अनपेक्षित कार्यों में सुख शशांति मिलेगी, अधिकारी सहयोग करेगा, निजी दायित्वों की पूर्ति होगा, मनोनुकूल काम बनेगा.

सिंह- घरेलू समस्याका समाधान होगा, राजनैतिक क्षेत्र में प्रयास करने पर सफलता मिलेगी, अधिकारी वर्ग सहयोग करेंगे, शुभ समाचार प्राप्त होगा.

कन्या- अधिकारियों से बातचीत में सावधानी रखें, नये लोगों के साथ मेलजोल बढ़ेगा, आकस्मिक धन लाभ होगा, पेंडिंग पडे कार्य बनेंगे.

तुला- आकस्मिक खर्च मेंवृद्धि होगी, घरेलू समस्या के समाधान से सुकून मिलेगा, आत्म विश्वास से अपनी बात रखें. परिश्रम करने पर सफलता मिलेगी.

वृश्चिक- वाणी पर नियंत्रण रखें, साझेदारी में नया कार्य शुरू कर सकते हैं, नियोजित कार्य में सफलता मिलेगी, मन में हर्ष रहेगा, प्रियजनों के कारण खर्च होगा.

धनु- तनाव की स्थिति स्वास्थ्य के लिये हानिकारक रहेगी, खर्च पर काबू रखें, लेनदेन में सावधानी रखें, नवीन कार्य उपहार आदि की प्राप्ति होगी.

मकर- कार्य विस्तार की योजना को धक्का लगेगा, वक्त पर धन की व्यवस्था होना मुश्किल है, मित्रता उपयोगी रहेगी, खानपान में सावधानी रखें.

कुम्भ- जमीन जायजाद, कोर्ट कचहरी से संबंधित कार्यों में अवरोध दूर होंगे, पारिवारिक जीवन में संतोष बना रहेगा, यश मिलेगा. लाभ होगा.

मीन- लेखन, अध्ययन के कार्यो में रूचि रहेगी, मित्र मिलन होगा, संबंधित अधिकारी का सहयोग मिलेगा, स्वास्थ्य संबंधी चिन्ता होगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

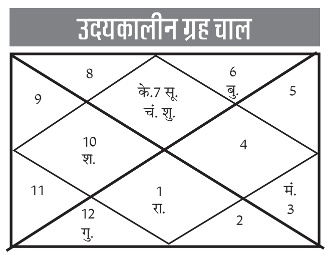

पंचांग

रा.मि. 23 संवत् 2083 वैशाख कृष्ण एकादशी चन्द्रवासरे रात 9/29, धनिष्ठा नक्षत्रे दिन 12/42, शुभ योगे दिन 2/16, वव करणे सू.उ. 5/43, सू.अ. 6/17, चन्द्रचार कुम्भ, पर्व- वरूथिनी एकादशी व्रत, शु.रा. 11,1,2,5,6,8 अ.रा. 12,3,4,7,9,10 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

वैशाख कृष्ण एकादशी को धनिष्ठा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़, खांड, सरसों, अरंडी, के भाव में तेजी होगी, जीरा,धनियां, लौंग, मैथी, की चाल मंदी की रहेगी, सोना, चांदी, में स्थिरता रहेगी, लालमिर्च, पदार्थो में घट-बढ़ के साथ पूर्व की चाल चलेगी. भाग्यांक 2660 है.

SUDOKU 7358

		2				1		
				2	5	7	3	
	9	4		6	7			2
	5		4		3			9
	8			9			7	
1			6		8		2	
6			7	4		9	5	
	4	5	8	3				
		8				6		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7357

9	1	6	2	3	7	4	5	8
8	2	3	4	5	9	1	7	6
4	5	7	1	6	8	3	9	2
5	6	8	7	1	2	9	3	4
1	7	4	9	8	3	2	6	5
2	3	9	5	4	6	8	1	7
7	4	1	8	9	5	6	2	3
3	8	5	6	2	1	7	4	9
6	9	2	3	7	4	5	8	1